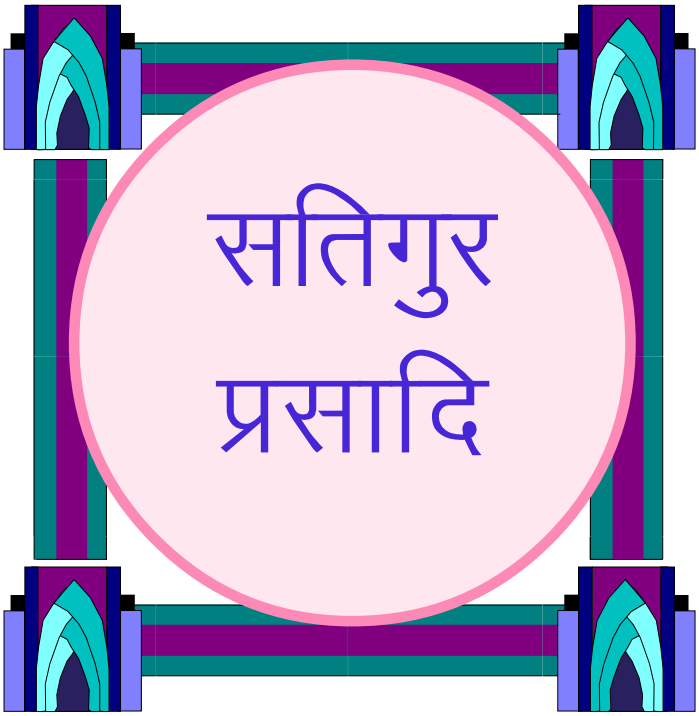

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

- गुर प्रसादि
- सतिगुर प्रसादि
- सति प्रसादि
- सीत प्रसादि

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

* * * * *

गुर प्रसादि प्रभ पूरा पाया। गुर प्रसादि जन्म मरन दा फंद कटाया। गुर प्रसादि मिल गुर मानस जन्म सफल कराया । गुर प्रसादि गुर लिखया धुर गुण निधान, घर आए भगत लेख लिखाया। गुर प्रसादि महाराज शेर सिँघ साचा वर पाया हरि राया। (२७ चेत २००८)

* * * * *

गुर प्रसादि हरि वरताइंदा। गुरसिखां झोली पाइंदा। वारो वारी हरि प्लाइंदा। जगत खुआरी आप मिटाइंदा। कलिजुग अन्तम भारी प्रभ साचा राह चलाइंदा। गुरमुखां देवे चरन प्यारी, सच प्रीती आप वखाइंदा। ना कोई रहे दर जीव हँकारी, भरम भुलेखे सारे लाहिंदा। जो जन आए चल सचे दरबारी, प्रभ तृष्ना भुक्ख मिटाइंदा। साची जोत जगे निरँकारी, निहकलंक नाउँ रखाइंदा। (७ चेत २०११ बि)

* * * * *

गुर प्रसादि गुर प्रसादि कराईए। गुर प्रसादि गुर दर्शन पाईए। गुर प्रसादि प्रभ जोत जगाईए। गुर प्रसादि काया तपत बुझाईए। गुर प्रसादि चन्नण वांग देह बणाईए। गुर प्रसादि गुर सेव कमाईए। गुर प्रसादि गुर भेट चढ़ाईए। गुर प्रसादि घर नौं निध पाईए। गुर प्रसादि गुर दर मंगण आईए। गुर प्रसादि नाम पदार्थ झोली पाईए। गुर प्रसादि मन दा भरम गवाईए। गुर प्रसादि सतिगुर पूरा नैण दरसाईए। गुर प्रसादि दुःख दलिद्दर सर्ब गवाईए। गुर प्रसादि जन्म सुफल जगत कराईए। गुर प्रसादि मनुख देह नूं लेखे लाईए। गुर प्रसादि गुर वडभागी घर महि पाईए। गुर प्रसादि गुर अंजण नाम नेत्रीं पाईए। गुर प्रसादि थिर घर बैठ गुर नाम दृढ़ाईए। गुर प्रसादि कलिजुग विच्च आण तर जाईए। गुर प्रसादि जगजीवन दाता रसना नित गाईए। गुर प्रसादि आप तरे कुटम्ब तराईए। गुर प्रसादि भय भंजन मेहरवान मन बख्शाईए। गुर प्रसादि त्रैलोकी नाथ उत्ते पलँघ बहाईए।

गुर प्रसादि नेत्र खोलू गुर चरन दरसाईए। गुर प्रसादि मन में होए ज्ञान, शब्द रूप गुर दर्शन पाईए। गुर प्रसादि गुर संगत रल जाईए। गुर प्रसादि मदि मास ना रसना लाईए। गुर प्रसादि अमृत फल गुर दर ते पाईए। गुर प्रसादि आपणी महिंमा आप लिखवाईए। गुर प्रसादि गुर पूरा सिर छत्तर झुलाईए। गुर प्रसादि जात पात दा भेत मुकाईए। गुर प्रसादि चार वरन इक्क हो जाईए। गुर प्रसादि विच्च संगत भैण भरा बण जाईए। गुर प्रसादि दर्शन परमगत पाईए। गुर प्रसादि प्रभ अबिनाश सद रिदे ध्याईए। गुर प्रसादि आत्म जोत गुर जोत जगाईए। गुर प्रसादि अज्ञान अन्धेर नास कराईए। गुर प्रसादि उपजे ब्रह्म ज्ञान सदा सुख पाईए। गुर प्रसादि साध संगत मिल हरि जस गाईए। गुर प्रसादि चरन कँवल गुर सीस झुकाईए। गुर प्रसादि पूरन परमेश्वर गुण गाईए। गुर प्रसादि वाह वाह करदिआ सतिजुग पाईए। गुर प्रसादि महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गुण गाईए।

गुर प्रसादि जेठ पंचमीं दिन मनाईए। गुर प्रसादि जोत निरञ्जण नित दर्शन पाईए। गुर प्रसादि गुर प्रसाद कराईए। गुर प्रसादि कमाई सुफल कराईए। गुर प्रसादि दुध्ध पुत्त दी तोट ना पाईए। गुर प्रसादि साचा साचा शाह इक्क रंग समाईए। गुर प्रसादि सोहँ शब्द गुण गाईऐ। गुर प्रसादि सचखण्ड समाईए। गुर प्रसादि जोत सरूप अन्त जोत मिल जाईए। गुर प्रसादि आवण जावण पन्ध मुकाईए। गुर प्रसादि गेड़ चुरासी फेर ना आईए। गुर प्रसादि कर्म लेख फेर लिखाईए। गुर प्रसादि पिछली भुल्ल बख्शा अग्गे नूं मार्ग पाईए। गुर प्रसादि मनो गवाईए विकार, नाम अमोलक पाईए। गुर प्रसादि चतुरभुज करतार गुरू विच्च समाईए। गुर प्रसादि आदि अन्त रंग इक्क हो जाईए। गुर प्रसादि पुरख निरञ्जण सर्ब सुख पाईए। गुर प्रसादि कर प्रसाद गुर भोग लगाईए। गुर प्रसादि गुर दर आया सुफल कराईए। गुर प्रसादि सुख सागर विच्च आण तर जाईए। गुर प्रसादि दुःखां वाला भार गुर दर ते लाहीए। गुर प्रसादि दुखी काया कंचन बण जाईए। गुर प्रसादि वांग चन्दन सदा महकाईए। गुर प्रसादि दाता करता जल थल समाईए। गुर प्रसादि साध संगत मिल हरि जस गाईए। गुर प्रसादि कल्लू काल विच्च पार कराईए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ दर्शन पाईए। गुर प्रसादि जेठ पंचम सोहँ नाम धिआईए। गुर प्रसादि गुर संगत प्रसाद कराईए।

गुर प्रसादि दरगाह विच्च गुर माण दवाए। गुर प्रसादि गुर साचा सच बचन लिखाए। गुर प्रसादि सतिजुग मार्ग आप चलाए। गुर प्रसादि धन्न गुरसिख जो गुर चरनीं लाए। गुर प्रसादि धन्न गुरसिख खड़े दर सीस झुकाए। गुर प्रसादि अज्ज दिन वडभागी, महाराज शेर सिँघ अवतार आए। गुर प्रसादि जेठ पंचवी होवे वडभागी, मातलोक प्रभ जोत जगाए।

गुर प्रसादि गुर कर्म विचारया। गुर प्रसादि गुरसिखां गुर जन्म सवारया। गुर प्रसादि गुर कलिजुग पार उतारया। गुर प्रसादि गुर पूरे सद बलहारया। गुर प्रसादि जेठ पंजवीं जगत उधारया । गुर प्रसादि प्रगटे महाराज शेर सिँघ सदा बलहारया।

गुर प्रसादि गुरसिखां गुर पार उतारया। गुर प्रसादि गुरसिख नाउँ गुर रसन उच्चारया। गुर प्रसादि सोहँ नाउँ भगत भंडारया। गुर प्रसादि कट्टे हउमे रोग, किल विख पार उतारया। गुर प्रसादि गवाए काया रोग, गुरसिख जन्म सवारया। गुर प्रसादि जिथ्थे सोहे भगत गुर पूरे बलहारया। गुर प्रसादि जेठ पंचम मिली वधाई, गुर पूरे दर्शन पा लिआ। गुर प्रसादि होए दर परवान, जिनां महाराज शेर सिँघ सिर हत्थ टिका लिआ। (५ जेठ २००७ बि)

* * * * *

सतिगुर प्रसादि सति वस्त, सति सतिवादी हरि वरताइंदा। गुरमुखां रक्खे सदा मस्त, नाम मस्ती इक्क चढ़ाइंदा। एका रंग रंगाए कीट हस्त, हस्त कीट विच्च आप समाइंदा। खोल्हणहारा हरि जू दृष्ट, आपणी दृष्टी एका पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्रसादि आप बणाइंदा।

सति प्रसादि सच सिँघासण, सति पुरख निरञ्जण आप बणाईआ। लहणा देणा चुक्के पृथ्मी अकाशन, जो जन रसना रस रस खाईआ। लक्ख चुरासी कट्टे फासन, राए धर्म ना दए सजाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे आसन, निरासा गुरसिख कोई रहण ना पाईआ। लेखा जाणे पवण स्वासण, रसना जिह्वा वेख वखाईआ। जन भगतां होवे दासी दासन, बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्रसादि इक्क बणाईआ।

सति प्रसादि हरि का रस, गुर सतिगुर आप बणाइंदा। जन भगतां अन्तर जाए वस, वस किसे ना आइंदा। गुरसिख तेरा गाए जस, जस वेद पुरान ना कोई अलाइंदा। साचा मार्ग इक्को दस्स, लक्ख चुरासी राह वखाइंदा। पन्ध मुकाया नस्स नस्स, जुग चौकड़ी पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्रसादि आप वरताइंदा।

सति प्रसादि सति सति भोग, सति सतिवादी आप लगाईआ। निरगुण सरगुण होया संजोग, महाराज शेर सिँघ करे कुड़माईआ। नाता तुट्टा लोक परोलक, अवण गवण ना कोई फिराईआ। सचखण्ड गौणा इक्क सलोक, साचा सोहला सचे माहीआ। अद्धविचकार ना सके कोई रोक, विष्न ब्रह्मा शिव राए धर्म गुरसिख निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल अगम्म अथाह एका ओट, एका मिले सच सरनाईआ। शब्द मिलावा निर्मल जोत, जोती जोत आप मिलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्रसादि जिस खवाईआ।

सति प्रसादि सति सवाद, रसना जिह्वा ना गुण जणाइंदा। जन भगतां देवे आदि जुगादि, दूसर हत्थ ना किसे फड़ाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों काढ, सन्त सुहेले मेल

मिलाइंदा। मेट मिटाए वाद विवाद, गुरमुख आपणी गोद बहाइंदा। गुर चेले लडाए लाड, गुरसिख आपणा भेव खुल्ह़ाइंदा। सदा सुहेला हरिजन विच्च रिहा आदि जुगादि, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्रसादि जिस अन्तर आप टिकाइंदा।

सति प्रसादि अन्तर रक्खे आप, आपणी दया कमाईआ। जन्म जन्म दा कट्टे पाप, दुरमत मैल धोवे शाहीआ। इक्क जणाए पूजा पाठ, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। बजर कपाटी जाए पाट, द्वैती पड़दा रहे ना राईआ। इक्क वखाए साचा हाट, सतिगुर पूरा आप खुल्ह़ाईआ। गुरमुख तेरी अन्तम कट्टे वाट, पान्धी बण बण फेरा पाईआ। गुर का रस लैणा चाट, रसक रसक एका मुख सलाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि संगत लाए आपणे घाट, बण खेवट खेटा जगत मलाह बेपरवाह पार किनारा इक्क रखवाईआ। (११—७६६)

* * * * *

गुर प्रसादि गुर दर ते पाया। गुर प्रसादि गुरसिख निर्मल देह कराया। गुर प्रसादि गुर चरन लाग महां सुख पाया। गुर प्रसादि महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया।

प्रभ दरस करे नर नारी। नाउँ धराए साध संगत प्यारी। निखुट्ट मैल होए जाए बिमारी। सोहँ साचा नाउँ, विरला कोई वपारी। गुरसिखां मन प्रभ का चाउ, हिरदे चढ़ी नाम खुमारी। दर आए होए परवान, बेमुख सुत्ते पैर पसारी। कलिजुग प्रगट विष्नूं भगवान, सारी सृष्ट अगन संघरी। भगत वछल महाराज शेर सिँघ, गुरसिख आए चरन दवारी।

जो जन आए तन मन प्रभ विच्च वसा के, आत्म तृप्ताए प्रभ दर्शन पा के। जो जन आए मन हँकार रखा के, गुर दर जाए पत्त गवा के। जो जन आए प्रभ चरन प्यासा, साध संगत प्रभ रक्खे मिला के। महाराज शेर सिँघ जोत प्रकाशे, सतिजुग साचा जावे ला के। (५ चेत २००८ बि)

* * * * *

पूरन गुर सद वड्डिआई। दे दरस तृखा मिटाई। निरधनां प्रभ होए सहाई। सरधनां प्रभ आस पुजाई। गुरमुख साचे घर तेरे जोत प्रगटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होए वाली दो जहान, गुर प्रसादी गुर प्रसादि भोग लगाई।

भोग लगाए सतिगुर मुख। साध संगत उतारे सारी भुक्ख। सुफल कराए मात कुक्ख।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर प्रसादि प्रभ वरताए, साध संगत मिटावे आत्म दुःख। मिटे दुःख आत्म अज्ञान। (६ जेठ २००८ बि)

* * * * *

सतिगुर प्रसादि जिन्नां मिल्या काया चोली, झलक झलिआं दए वखाईआ। अंदरे अंदर बदल देवे आपणी बोली, अनबोलत राग सुणाईआ। सच दवारा देवे खोल्ही, पड़दा सति उठाईआ। बदल देवे काया चोली, चोला साचा तन पहनाईआ। वेख वखाणे साढ्ढे तिन्न हत्थ डोली, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दित्ती वडयाईआ।

प्रसाद कहे मेरा लेखा लग्गा, मिली माण वडयाईआ। जन भगतां वधे अग्गा, पिछली रीत चुकाईआ। पुरख अकाल सज्जण सका, इक्को घर वखाईआ। भज्जणा पए ना मदीना मक्का, काअबा घर घर दए दरसाईआ। लेख चुका के अठां सट्ठां, तीर्थ तट्टां पन्ध मुकाईआ। पन्ध मुका के चौदां हट्टां, विद्या चौदां डेरा ढाईआ। हरि मिलण दीआं खोल्ह के अक्खां, आखर भेव मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दित्ती वडयाईआ।

मिली वड्डिआई चाउ घनेरा, प्रभ मेहर नज़र उठाईआ। जन भगतां अंदर मेरा डेरा, घर साचे दित्ता बहाईआ। जिथ्थे ढोला इक्को तेरा, तूं ही तूं ही राग अलाईआ। ना कोई संझ ना सवेरा, संध्धया रूप ना कोई वटाईआ। नज़री आया नेरन नेरा, निज घर बैठा सोभा पाईआ। वसदा वेख्या साचा खेड़ा, खिड़की आप खुल्हाईआ। चुकदा वेख्या झूठा झेड़ा, झगड़ा दए मिटाईआ। गुआंदा वेख्या जगत अन्धेरा, सच प्रकाश कराईआ। सति धर्म दा आया वेला, गुर चेला रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ।

प्रसादि कहे मेरा अंदर खात, खाता नज़र किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर खुशीआं गाँदे गाथ, ढोलिआं राग अलाईआ । सतिगुर किरपा सति आवे सवाद, रसना जिह्वा समझ सके ना राईआ। जिस ने रचना रची आदि, मध अन्त वेखे थाउँ थाईंआ। शब्द अगम्मी वज्जे नाद, विजे आपणी लए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ।

प्रसाद कहे मोहे मिल्या असथान, भूमिका इक्क वडयाईआ । जिस घर वसे श्री भगवान, निरगुण डेरा लाईआ। सो मन्दर सच मकान, गुरू दवार इक्क समझाईआ। जिथ्थे झुलदा धर्म निशान, कूड़ कुड़िआर इक्क मिटाईआ। उथ्थे मिलदा इक्क ज्ञान, वरनां चार पढ़ाईआ। चढ़ाउँदा सच बबान, शब्दी राह वखाईआ। भगतां देंदा दान, सन्तां गले लगाईआ। गुरमुखां कर परवान, गुरसिखां वेख वखाईआ। सखीआं मिले सच्चा काहन, बंसरी नाम

सुणाईआ। सहीआं सुहलो इक्को राम, रमता हो के आया धुर दा माहीआ। गुरमुख वेखे बाल अंञाण, बाली बुद्ध दए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा कराईआ।

प्रसाद कहे मैं वड़ के अंदर घर घर खुशी मनाईआ। सजदे करदे वेखे सूरय चन्दर, रव सस सीस निवाईआ। भय विच्च वेख्या हुंदा मनुआबन्दर, दह दिशा ना उठ उठ धाईआ। दीवा जगदा वेख्या अन्धेरी कंदर, गृह मन्दर होइ रुशनाईआ। शरअ दा तुटदा वेख्या संगल, दीन मज़्हब ना कोई चतुराईआ। झुकदा वेख्या मण्डल, अक्ख नैण शरमाईआ। भगतां सुणयां इक्को मंगल, सोहँ ढोला रहे गाईआ। अगे लोड़ रही ना जाण दी जंगल, उजाड़ पर्बत ना कोई भवाईआ। सतिगुर प्रीती साचा बंधन, बन्दगी वाला बंदिआं विच्च पाईआ। नाम भबूती ला के चन्दन, नूर चन्द करे रुशनाईआ। जुग जन्म दी तुट्टी आया गंढुण, डोरी आपणा तन्द बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान आपणी दया कमाईआ।

प्रसाद कहे मैं पाया पिर, प्रीतम दित्ती वडयाईआ। जिस दी उडीक रक्खी चिर, चरितरां विच्च वक्त लँघाईआ। दह दिशा वेख्या फिर, भज्ज भज्ज वाहो दाहीआ। रूप नज़र ना आया निरवैर निर, निरँकार ना कोई मिलाईआ। घर ना दिसिआ किसे थिर, सच दवार ना कोई बहाईआ। कुसंभड़े फुल्ल रहे खिड़, पंखड़ीआं जोड़ जुड़ाईआ। बिन सतिगुर पूरे दो जहानां कोई ना आवे धुर दे पिड़, पिण्डा खाली देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

प्रसाद कहे मेरा अनोखा लुतफ, लुतीफिआं विच्च ना कोई गिणाईआ। पुरख अबिनाशी वड्डयां मुफ्त, मरदिआं रिहा जिवाईआ। गुरमुख सभ तों उत्तम श्रेष्ट चुस्त, जो बणयां पान्धी राहीआ। जिस दी महिंमा अथवा उसत, उसतत्त करे लोकाईआ। उस दे हत्थ रखिआ पुशत, पनाह दित्ती शरनाईआ। अंदरों हँकारी मेट के दुष्ट, दृष्ट दए खुलाईआ। लहणा चुके बालिशत अंगुशत, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर दिती आप वडयाईआ।

प्रसाद कहे मेरा चुक्किआ लेखा, अलख दित्ती सरनाईआ। तिन्नां मिल के कीता एका, उस एकँकार विच्च समाईआ। सभ दा अगों मुके ठेका, बली मात ना कोई चढ़ाईआ। नज़री आए सौहरा पेका, भईआ सौहरा वंड ना कोई वंडाईआ। हुक्मरान धुर दा नेता, नर निरँकार सच्चा शहनशाहीआ। जिस दा भुलया सृष्टी चेता, दृष्ट ना कोई खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ।

प्रसाद कहे मेरी आसा पुंनी, पूरन सतिगर पाईआ। गुरमुख मिल्या धुर दा गुणी, गहर गम्भीर जोड़ जुड़ाईआ। जिस दी कहाणी जुग जुग सुणी, सो साहिब होइ सहाईआ।

जिस नूं गाउँदे रिखी मुनी, गुर अवतार ध्यान लगाईआ। जिस दी रागाँ नादां अंदर धुनी, शब्दी ताल वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो साहिब होया सहाईआ।

प्रसादि कहे मेरा गिआ हउका, हउँ भाव इक्क जणाईआ। सहारा मिल्या साचे नाउँ का, नईआ नाम दृढ़ाईआ। भुलेखा चुक्किआ दूजे भाउ का, भरम गढ़ तुड़ाईआ। दर्शन कीता पूरे शाहो का, शहनशाह नज़री आईआ। अग्गे लेखा रहे ना किसे के दाउ का, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आप समझाईआ।

प्रसाद कहे मैं होया प्रसंन, प्रसन्ता नज़री आईआ । अक्खीं वेख के भगतां चिन्न, मेरी चिन्ता मुख छुपाईआ। वक्खरा विहार कीता तिन्न, त्रैलोक रहे जस गाईआ। लेखा कोई ना जाणे भिन्न भिन्न, भिन्नड़ी रैण वज्जे वधाईआ। कर के खेल अगम्मी छिन्न, शहनशाह हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

प्रसादि कहे उह आया अख़ीर, आखर मिली वडयाईआ। हरि जू बदल दित्ती तकदीर, मेहर नज़र उठाईआ। बिरहों विछोड़ा कट के पीड़, धुर दा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हत्थ रख तदबीर। (२ मध्घर २०२१ बिक्रमी)

* * * * *

गुर प्रसादि, मन जोत जगाईए। गुर प्रसादि, अमृत नाम मुख चवाईए। गुर प्रसादि, झिरना निझरो झिराईए। गुर प्रसादि, नाभ कँवल खुल्ह़ाईए। गुर प्रसादि, दवार दसवें दा पर्दा लाहीए। गुर प्रसादि, शब्द धुन मन वजाईए। गुर प्रसादि, अनहद राग मन पाईए। गुर प्रसादि, घर शाहो पाईए। गुर प्रसादि, हंगता रोग गवाईए। गुर प्रसादि, माया मोह चुकाईए। गुर प्रसादि, भर्म का नास कराईए। गुर प्रसादि, जगत अबिनाश दरसाईए। गुर प्रसादि, सोहँ शब्द गुण गाईए। गुर प्रसादि, सचखण्ड समाईए। गुर प्रसादि, ब्रह्म सरूप हो जाईए। गुर प्रसादि, गुरमुख नाम धराईए। गुर प्रसादि, जोती जोत मिल जाईए। गुर प्रसादि, पारब्रह्म गुर पाईए। गुर प्रसादि, गहर गम्भीर हो जाईए। गुर प्रसादि, आवण जावण मुकाईए। गुर प्रसादि, परमगत पाईए। गुर प्रसादि, रसना हरि हरि गाईए। गुर प्रसादि, कल पार तराईए। गुर प्रसादि, किसे दा भाउ ना रखाईए। गुर प्रसादि, गुर पुरी नूं जाईए। गुर प्रसादि, निज़ानंद सुख पाईए। गुर प्रसादि, त्रकुटी कुफल खुल्ह़ाईए। गुर प्रसादि, निरञ्जण जोत समाईए। गुर प्रसादि, हरि सन्तन पाईए। गुर प्रसादि, महाराज शेर सिँघ रिदे ध्याईए। (१५ विसाख २००७ बि)

* * * * *

जो प्रसाद संगत विच्च खावे। विच्च चुरासी फेर ना आवे। जो संगत नूं देवे माण। उस नूं आप मिले भगवान। संगत सतिगुर आप बणावे। विच्च संगत आपणा आप रखावे। होवे अद्धीन जो संगत धिआवे। बध्धा हरि जू एथ्थे आवे। लाज सिखां दी आप रखावे। सच्चा सतिगुर तां अखवावे। (१७ भादरों २००६)

* * * * *

गुर प्रसादि गुरसिखां गुर दर सूझिआ। गुर प्रसादि गुर साचा, जिन कलिजुग बूझिआ। गुर प्रसादि गुर चरन लाग, भाउ दूजा ना लगिआ। गुर प्रसादि मन शब्द वराग, गुरसिख दर दर लूझिआ। गुर प्रसादि जोत आधार गुरसिख गुर चरन कलिजुग झूजिआ। गुर प्रसादि प्रभ आदि जुगादि, गुरमुखां थिर घर बूझिआ। गुर प्रसादि प्रभ विनोद विनाद, महाराज शेर सिँघ दरस देवे सदा आत्म गूझिआ।

गुर प्रसादि गुर दर पुचाणा। गुर प्रसादि कल मिटिआ आवण जाणयां। गुर प्रसादि कर दरस, गुर चरन रंग माणयां। गुर प्रसादि गुरसिख पूरा कलिजुग चले गुर के भाणयां। गुर प्रसादि उतरे कल कलेश वसूरा, निहकलंक जिन जोत सरूप पुजाणयां। (३ कत्तक २००७)

* * * * *

गुर प्रसादि, गुर दर पाया। गुर प्रसादि, प्रभ दरस दिखाया। गुर प्रसादि, प्रगट जोत निहकलंक भोग लगाया । गुर प्रसादि, साध संगत मुख लगाया। गुर प्रसादि, दुक्ख रोग देह गवाया। गुर प्रसादि, तीन ताप प्रभ नास कराया। गुर प्रसादि, मरू देवा छेआ देवी प्रभ वस कराया। गुर प्रसादि, गुर गोरख साचा नाद वजाया। गुर प्रसादि, जामा धार निहकलंक कलिजुग अन्त सर्ब मिटाया।

गुर प्रसादि, प्रभ आए प्रसादी। गुर प्रसादि, सभ सृष्ट साधी। गुर प्रसादि, गुरमुख साचे प्रभ रसन अराधी। महाराज शेर सिँघ जोत जगाए, कलिजुग अनादी।

गुर प्रसादि, गुर रंग चढ़ाया। गुर प्रसादि, प्रभ कलिजुग भरम मिटाया। गुर प्रसादि, साचा शब्द प्रभ ज्ञान दवाया। गुर प्रसादि, गुरमुख साचे हिरदे सदा वसाया। गुर प्रसादि, कलिजुग पोह ना सके माया। गुर प्रसादि, प्रभ चरन लाग साचा वर प्रभ दर ते पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सिर हत्थ टिकाया।

गुर प्रसादि, प्रभ का रंग। गुर प्रसादि, साचा नाम सोहँ साध संगत लिआ मंग। कलिजुग जीव प्रभ दर ना संग। कलिजुग झूठा जीव टुट्ट जाए जिउँ काची वंग। गुर प्रसादि, गुरसिख जन्म ना होए भंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सहाई अंग संग।

गुर प्रसादि जोत जगाई। गुर प्रसादि, सतारां सावण साध संगत मन वधाई। प्रगट जोत निहकलंक, साची लिख्त कराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे वड्डिआई।

गुर प्रसादि, गुर पूरा पाया। गुर प्रसादि, भरम भुलेखा सारा लाहिआ। गुर प्रसादि, वर दर प्रभ पाया। गुर प्रसादि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द सुणाया।

गुर प्रसादि, दुरमत जाए। गुर प्रसादि, साची मत सति वरताए। गुर प्रसादि, प्रभ अबिनाशी घर में पाए। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, प्रगट जोत भोग लगाए।

भोग लगाए भगत घर। सोहँ साचा शब्द दे जाए वर। चरन लाग गुर संगत गई तर। कौर रणजीत मिल्या साचा वर। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई निहकलंक अवतार नर।

भोग लगाए भगत वछल भगवान। साध संगत होवे रसना पान। सति प्रसादि आत्म तोड़े अभिमान। गुर प्रसादि, कलिजुग जीव आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान। गुर प्रसादि प्रभ गुण जाणे कोई गुण निधान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, एका नाम देवे वड्ड दानी दान।

भोग भोग भोग, प्रभ लगाए भोग। रोग रोग रोग, गुरसिखां मिटाए रोग। जोग जोग जोग, सोहँ शब्द साचा जोग। भोग भोग भोग, गुरसिख आत्म रस गुर चरन प्रीती भोग। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, प्रगट जोत कलिजुग गुरसिख घर लगाए भोग।

भोग लगाए विष्नूं भगवान। साचा होया जगत परवान। भक्ख भोज लेहज फेहज चारों इक्क समान। झूठा जगत ना जाणे भेव बली बलवान। कलिजुग जामा धार, महाराज शेर सिँघ देवे दरस गुणी निधान। (१७ सावण २००८ बिक्रमी)

* * * * *

गुर प्रसादि गुर दर पाया। गुर प्रसादि प्रभ दरस दिखाया। गुर प्रसादि प्रगट जोत प्रभ भोग लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साध संगत तेरा सोग मिटाया। (२२ माघ २००८)

* * * * *

गुर प्रसादि भोग लगाया। गुर प्रसादि साध संगत आप वरताया। गुर प्रसादि

गुर पूरे गुरमुख साचे मुख रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर मात कुक्ख सुफल कराया।

भोग लगाए आप भगवान। गुरमुखां देवे आत्म दान। चरन धूड़ साचा इशनान। आत्म धूड़ होए चतुर सुजान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा आप रखाए आपणी आण।
(१४ भादरों २००६ बिक्रमी)

* * * * *

हरिजन सद साचा संगे। हरिजन हरि देवे दान, जो जन मूंहों मंगे। हरि जना हरि देवे माण, आप लगाए आपणे अंगे। हरिजनां हरि मिल्या मेहरवान, सदा इक्क रंगे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा दरस दान मंगे।

गुर पूरा भाग लगावंदा। गुरसिखां चोग चुगावंदा। आत्म दुःख सर्ब मिटावंदा। तृस्ना भुक्खां सर्ब गवावंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सीतल सीतल सीतल सीत प्रसाद साध संगत तेरी रसना रस दवावंदा।

गुर प्रसादि रसना रस। गुर प्रसादि आत्म विकार गए नस्स। गुर प्रसादि पांचों होए वस। गुर प्रसादि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरसिखां देवे हत्थ।

गुर प्रसादि गुर साचे दीआ। गुरसिख तेरी बणत बणाए कर के साचा हीआ। महिंमा अगणत गणी ना जाए, तेरी आत्म जोत जगाया दीआ। गुरमुख साचे सन्त पहली माघ गुर दर्शन जिन कीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा बीज विच्च आत्म दे बीआ।

गुर प्रसादि गुर पूरा जाणयां। प्रभ अबिनशी घर सच पछाणयां। सच तख्त हरि बैठा वड सुल्तानया। गुरमुखां गुरसिखां पार लँघाए कर कर कर वड मेहरबानीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगादि आदि जुगो जुग तेरी सच निशानीआं।
(१ माघ २००६)

* * * * *

गुर प्रसादि गुर पद पाए। गुर प्रसादि गुर सद घर लै जाए। गुर प्रसादि गुरसिखां प्रभ सद सद तराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त पकड़ बांहे।

गुर प्रसादि गुरसिख जाण। गुर प्रसादि गुरसिख रसना गाण। गुर प्रसादि गुर अमृत सच वखाण। गुर प्रसादि महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन चरनी डिगण आण।

गुर प्रसादि आत्म चीत। गुर प्रसादि काया सीत। गुर प्रसादि प्रभ देवे गुरसिखां चरन प्रीत। गुर प्रसादि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां रक्खे जगत सुरजीत।

गुर प्रसादि सभ दुःख गवाया। गुर प्रसादि सभ सुख गुर चरन पाया। गुर प्रसादि उतरी भुक्ख, हरि दर्शन पाया। गुर परसदि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुखां आप दवाया।

गुर प्रसादि गुरसिख खाए। मानस जन्म ना बिरथा जाए। आपणा लेखा लए चुकाए। वेखा वेख जो रहे शरमाए। वेले अन्त फिरन जिउँ सुंञे घर काए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दरगाह ना देवे थाएं।

गुर प्रसादि गुर दर खाओ। गुरसिख साचे बण अमरापद पाओ। प्रभ अबिनाशी जोत जगाई, कर दरस सच घर जाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन सेव सद सद कमाओ। (१६ चेत २०१० बिक्रमी)

* * * * *

गुर प्रसादि गुर दर्शन पाया। गुर प्रसादि गुर अंग लगाया। गुर प्रसादि गुरसिखां जुग कल तराया। गुर प्रसादि साध संगत हरि जस गाया। गुर प्रसादि जन्म अमोलक कलिजुग कराया। गुर प्रसादि काल अन्त जम नेड़ ना आया। गुर प्रसादि जन्म मरन दा फंद कटाया। गुर प्रसादि सतिजुग सति घर वखाया। गुर प्रसादि भगत जन गुर चरन दरसाया। गुर प्रसादि बहत्तर जामे भगत जन प्रभ माण दवाया। करे भगत उधार, पाल सिँघ मुख रखाया। लिआ जन्म सुधार, सवरन दरबान बणाया। माणा रंगा दित्ते तार, पंजवां सिख बुध रलाया। सिँघ मोहण ना होए खवार, तिन्न अस्सू जिन बचन उलटाया। दो हज़ार चार बिक्रमी नींह रखाए सच दरबार, सतिजुग बणाया। देह रुलाई सृष्टी खपाई, कलिजुग आप रघुनाथ उलटाया। धाम सच बणाया, महाराज शेर सिँघ विच्च आसण लाया, बैठ अंदर जगत अन्धेर वरताया। (२४ अस्सू २००८ बि)

* * * * *

गुर प्रसादि दर मिले वड्डिआई। गुर प्रसादि साध संगत मन वज्जे वधाई। गुर प्रसादि जीव गुर दरस पाई। गुर प्रसादि हउमे ममता विच्च देह जलाई। गुर प्रसादि दुःख दर्द प्रभ दे मिटाई। गुर प्रसादि साधन आत्म बूझ बुझाई। गुर प्रसादि आदि जुगादि सर्ब ठांए रिहा समाई। गुर प्रसादि अबोध अगाध जोत सरूप शब्द लिखवाई। गुर प्रसादि रसना साध हरि हरि शब्द रसना लिखवाई। गुर प्रसादि कलिजुग होए पूरन भाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दरस दिखवाई। (१-२०१)

* * * * *

गुर प्रसादि गुर पूरा पाया। गुर प्रसादि गुर भेट चढ़ाया। गुर प्रसादि साचे गुर हिरदे हरि वसाया। गुर प्रसादि लिखया धुर, कल आ आप प्रगटाया। गुर प्रसादि गुर चरन संग जुड़, आत्म पड़दा लाहिआ। गुर प्रसादि, गुरमुख पूरे आत्म गोझ विच्च देह रखाया। गुर प्रसादि किरपा कर गुर पूरे भरम भुलेखा लाहिआ। गुर प्रसादि, आदि जुगादि साची दात प्रभ देंदा आया। गुर प्रसादि, अगम्म अगाध कलिजुग जोत प्रगटाया। गुर प्रसादि होए आत्म अनाद, महाराज शेर सिँघ साचा प्रसादि गुरसिख तेरी भेट चढ़ाया।

सति प्रसादि देवे वड्डिआई। दे प्रसादि सुफल कुक्ख कराई। प्रगट जोत प्रभ भए सहाई। महाराज शेर सिँघ कल तेरी वड वड्डिआई। (१-२५८)

* * * * *

गुर प्रसादि गुर दर आए। गुर प्रसादि प्रभ दर्शन पाए। गुर प्रसादि जगत जलंदा रक्ख वखाए। गुर प्रसादि गुरमुख गुरसिख कहाए। गुर प्रसादि जो जन गुर प्रसाद मुख में पाए। झूठी काया दुःख रोग गवाया, जो जन मनो ना भुलाए। शब्द भुलाए बहुत दुःख पाए, साचा प्रभ शब्द लिखवाए। महाराज शेर सिँघ जोत सरूप, गुरसिखां ना नरक निवास दवाए। (१-२७६)

* * * * *

पंचम जेठ प्रभ जोत प्रगटाए। प्रगट जोत प्रभ साचा भोग लगाए। भोग लगाए गुर प्रसादि गुरमुखां मुख लगाए। दुक्ख गवाए गुर प्रसादी, पंचम जेठ दया कमाए। महाराज शेर सिँघ जो जन रसना अराधे, जन्म मरन दा दुःख गवाए।

गुर प्रसादि गुर दर बूझिआ। गुर प्रसादि गुर चरन लाग गुरसिख झूजिआ। गुर प्रसादि गुरसिखां मन प्रभ साचा लूझिआ। गुर प्रसादि प्रभ भरम चुकावे विच्च देह दूजिआ। गुर प्रसादि गुरसिख तर जाए, महाराज शेर सिँघ जन भगतां बूझिआ। १-२८०

* * * * *

बीस चाली कहे साड्डा पिआ मुल्ल, कीमत करते अन्त चुकाईआ। साडा उधार उबलया उत्ते चुल, अगनी प्रेम प्यार वधाईआ। पान जल गए भुल्ल, आपणा आप छुपाईआ। घृत तुल के आपणे तोल, तुरत आपणा रूप वटाईआ। खुशीआं नाल विच्च कड़ाही फरकण लगे मेरे बुल, सोहणी अवाज़ सुणाईआ। इक्क दूजे नाल रहे घुल, उठ उठ बल वखाईआ। करया खेल प्रभू अनमुल, मेहर नज़र उठाईआ। भाग लगा के भगवन कुल्ल, भगतां दए वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे दित्ती माण वडयाईआ।

प्रसाद कहे मैं सतिगुर किरपा, मेहर रूप वटाईआ। मेरा रस ना जाए बिरथा, बिन गुरमुखां हत्थ किसे ना आईआ। एह लेखा पूरब देर दा, पिछला लहणा चुकाईआ। सांभ रक्खी जो बणा के विरसा, धन्न दौलत जगत कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ।

प्रसाद कहे प्रभ कीती किरपा, किरपानिध दया कमाईआ। जन भगतां कट्टणहारा बिप्पता, पूरब वजोग चुकाईआ। अग्गो बंधावे सच्चा निसचा, चरन प्रीत जणाईआ । दो जहानां बदलणहारा फिरका, हुक्म हाकम इक्क सुणाईआ। वेखो खेल साचे पिर का, परम पुरख रिहा जणाईआ। उलटा गेड़ निरगुण गिढ़दा, सरगुण धार जणाईआ। जन भगतां सभ तों वक्खरा रक्खे हिरदा, सन्तां हिरदा समझ कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

प्रसाद कहे मेरी बणी बणत, पुरख अकाल दित्ती वडयाईआ। गुरमुख खाए विरला सन्त, जिस मेहर नज़र उठाईआ। मेल मिलावे नर हरि कन्त, नर नरायण होए सहाईआ। उत्तम श्रेष्ट विच्चों जंत, लक्ख चुरासी माण रखवाईआ। लेखा जाणे ब्राह्मण पंडत, जजमान ठाकर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ।

प्रसाद कहे प्रभ भए दयाल, दित्ती माण वडयाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले उपजा आपणे लाल, लालन रंग रंगाईआ। प्रेम प्रीती परोस थाल, सोहणी वंड वंडाईआ। धुर दे विछड़े मेल नाल, धुर दा संग रखवाईआ। जगत अव्वलड़ी चल के चाल, जरा दए समझाईआ। भगत वछल बण किरपाल, भगवन होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे देवे माण वडयाईआ।

प्रसाद कहे मोहे रक्खा परात विच्च ढक, ओड्डण उत्ते पाईआ। मैं अंदर बैठा रिहा हस्स, खुशीआं रंग चढ़ाईआ। प्रभ अंदरे अंदर मैनूं देवे रस, आपणी धार चुआईआ। मैं चरनी गिआ ढठ्ठ, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। किरपा कर पुरख समर्थ, शब्द इशारे नाल उठाईआ। उठ लवा मेरा धुर दा हत्थ, जिस लग्गिआं तेरी लागत कीमत दिआं बदलाईआ। तेरा गृह तेरा मन्दर तेरा घर गुरमुखां अंदर वस्सया, डेरा बंक दए समझाईआ। उथ्थे जावीं चावां नठ्ठया, खुशीआं राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ।

प्रसाद कहे प्रभ कीती मेहर, मेहर नज़र उठाईआ। नज़री आया नेड़न नेड़, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जां वेख्या शब्द सरूप धुर दा शेर, भबक आपणा नाम लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आ लिआंदे घेर, विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। आओ वेखो प्रभ दा खेल, निरवैर निराकार निरँकार रिहा वखाईआ। सच कटार आपणा नाम विच्च

फेर, चारों कुण्ट भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वडयाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर वेख प्रसाद, सारे खुशीआं मनाईआ। प्रभ एस विच्चों जे थोड़ी थोड़ी देवे दाद, वस्त अगम्मी झोली पाईआ। असीं एथ्थे ओथ्थे रक्खीए याद, भुल्ल कदे ना जाईआ। अगम्म अगम्मड़ा आवे सुआद, रसना जिह्वा ना कोई समझाईआ। श्री भगवान वेखणहारा खेल तमाश, तरां तरां समझाईआ। जुग चौकड़ी पा के गए गोपी काहन रास, राम सीता मात हंढ्ढाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द करदे गए बलास, कागज कलम शाही ढोल नाल भराईआ। लक्ख चुरासी जीवां जंतां गए आख, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ। चारों कुण्ट कहन्दे गए असीं प्रभ दी ज़ात, चाकर सेवक रूप अखवाईआ। नित नवित्त धुर दी रक्खदे गए आस, बेपरवाह परवरदगार गुसाईंआ। सभ दी पूरी करे ख़ाहश, निरगुण निरवैर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ।

परात कहे मेरा धन्न भाग, भागाँ भरी आपणा नाम रखवाईआ। पुरख अबिनाशी रक्खे लाज, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जिस अंदर हरि किरपा भरया प्रसादि, प्रसादि आपणी मेहर समझाईआ। जिस प्रसादि दा अंदर वड़ वेख्या किसे ना राज़, परदा सके ना कोई रखवाईआ। साध सन्त जीव जंत रसना जिह्वा इस तों लभ्भण सुआद, मन वासना खुशी मनाईआ। सति प्रसादि सतिगुर प्रसादि गुर प्रसादि किसे हत्थ ना आवे हाथ, पृथ्मी आकाश गगन मण्डल ना कोई वरताईआ। जे वरतावे तां पुरख अबिनाश, गुर अवतारां भोरा भोरा झोली पाईआ। दूजी वार किसे फेर लभ्भे ना उह सवाद, रस विच्चों रस ना कोई जणाईआ। जुग चौकड़ी करदे फिरन तलाश, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ।

परात कहे जिस वेले मेरे अंदर वड़िआ, प्रसादी आपणा रूप वटाईआ। चाओ घनेरा मैनूं इक्को चढ़या, खुशीआं रंग वखाईआ। तपदा तपदा मेरे विच्च बह के ठरया, आपणा रूप वटाईआ। मैं हस्स के किहा क्यों मेरी छाती चढ़या, आपणा भार टिकाईआ। प्रसाद कहे मैं ना जींदा ना मरया, खौंचे मार मार मेरा अग्गा पिच्छा दित्ता हलाईआ। सच पुच्छें कड़ाही विच्च सड्डिआ, अगनी भेट चढ़ाईआ। बल सड़ फेर तेरे घर वड़िआ, आपणा वेस वटाईआ। गुरमुखां आपणे हत्थ फड़िआ, सच दवारे दिता टिकाईआ। सच पुच्छें मैं खुशीआं नाल भरया, प्रभ दर्शन सच्चा पाईआ। एसे कारन वड्डा दुःख जरया, चिन्ता ग़म ना कोई रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा आप बणाईआ।

परात कहे सुण मेरा बल, मैं सच दिआं सुणाईआ। सड़दे बलदे नूं आपणे उत्ते लिआ झल्ल, सी कीती जरा ना राईआ। उतों वेख मेरी सड़ गई खल्ल, मनसूर वेख

नैण शरमाईआ। थल्लउँ अजे ना जावां हल्ल, सोहणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वडयाईआ।

प्रसाद कहे तेरे मेरे किछ नहीं वस, करन करावणहार अवर अखवाईआ। मैं तक्कां किस वेले प्रभ मेरे उत्ते रक्खे हत्थ, आपणी दया कमाईआ। मेरा प्रेम भरया सुआद लए चक्ख, आपणे मुख लगाईआ। परात कहे मैं वेखां आपणी अक्ख, नेत्र नैण उठाईआ। घृत कहे मेरी पूरी होवे आस, तृस्ना मेट मिटाईआ। जल कहे मैं धरां धरवास, अन्न कहे मिले वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखवाईआ।

प्रसाद कहे मेरे उत्ते प्रभ रक्खया हत्थ, हौली जेही टिकाईआ । मेरी सुत्ते दी खुल्ली अक्ख, नेत्र नैणां लई अंगढ्ढाईआ। जां वेख्या प्रभ निरगुण रूप लिआ तक्क, जोती जाता नज़री आईआ। मैं चरन कँवल गिआ ढठ्ठ, सीस जगदीस झुकाईआ। नेत्र रो के किहा मैनूं दे मेरा हक़, तेरे हत्थ वडयाईआ। मैं जुग चौकड़ी कौलिआं विच्च वड़ वड़ गिआ थक्क, मैनूं भोग लाउण वाला नज़र कोई ना आईआ। चोरां वांग पीड़िआं थल्ले छड्डुया रक्ख, ठग्गाँ वांग चुराईआ । पिच्छे हो के खावण झट्ट, वड्डे वड्डे बहि के थाईंआ। जे भौं ते जांवां ढठ्ठ, डरदे पैरां हेठ देण दबाईआ। एसे करके मैं गोबिन्द इक्क वार दित्ता दस्स, सची तरां जणाईआ। कुछ मैनूं सभ ते हो गिआ शक़, सहिसा घर घर नज़री आईआ। कसाई कोई ना लावे मैनूं हत्थ, खावे उह ना जिस होई तेरी जुदाईआ। मैं विकणा नहीं किसे हट्ट, कीमत कोई ना मेरी रखवाईआ। इक्को आस पुरख समरथ, तेरे चरन रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणी इक्क वडयाईआ।

श्री भगवान कहे सुण समग्री बच्चे, सगली चिन्त मिटाईआ। तेरे रिंन ना खावे कोई भत्ते, खुशीआं रंग उडाईआ। तैनूं वेख साध सन्त ना कोई नच्चे, बाटिआं विच्च ना कोई छुपाईआ। ओहले हो ना मारे फक्के, मूठीआं नाल अंदर धकाईआ। सभ दे नकेल पाउँ नक्के, बन्दर कलंदरा वांग नचाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों थोड़े कढ्ढुां अच्छे, जिनां अच्छी तरां समझाईआ। पैहलों कट के फासी रस्से, जम का तरास गुआईआ। धुर दा मार्ग इक्को दस्से, सच करां पढ़ाईआ। फेर तेरे वल तक्के, आपणा ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कर अकट्ठे, सभना दए दखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहणा देणा झोली पाईआ।

प्रसाद कहे प्रभू तेरी ओट, दूजा नज़र कोई ना आइंदा। तेरी किरपा इक्को बहुत, दूजी आस ना कोई रखवाइंदा। तेरी वड्डी सभ तों सोच, दूजा सोच समझ ना कोई रखवाइंदा। बिन तेरी किरपा मेरे खादिआं किसे ना आवे मौज, मुफलस शाह ना रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच तेरे दर मंग मंगाइंदा।

श्री भगवान बख्शे टेक, सच देवां सरनाईआ। जिस वेले गुरमुख मेरी करन भेट, तेरा सोहणा रूप बणाईआ। मेहरवान हो के अगम्मे नेत्र लवां वेख, जगत नोचण बन्द कराईआ। तैनूं अग्ग कड़ाही दा लगया भुल्ल जाए सेक, सांतक सति सति समाईआ। सच प्रेम करे हेत, प्रीती इक्को इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयावान दया कमाईआ।

प्रसादि कहे प्रभ तेरा भोग, भगवन मोहे भाईआ। धुर दा होवे सच संजोग, मिले ना कोई जुदाईआ। पूरब कट्टया जाए रोग, अग्गे चिन्त ना कोई रखवाईआ। मैं हत्थ नहीं औणा रोज, बिन तेरी किरपा मेरी बणत ना कोई बणाईआ। कोट जन्म दे विछड़े जो गुरमुख रहे लोच, तिन्नां देणा आप वरताईआ। बाकी वास्ते प्रभ हो जावे खमोश, सद्दा दे ना किसे खवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सद होणा सहाईआ।

सुण प्रसाद मेरे लाल, बच्चू अच्छी तरां जणाईआ। तेरा वचोला दीन दयाल, दया रूप समाईआ। तेरे उत्ते पर्दा पाया चिटा रुमाल, धुर दी धार वखाईआ। अंदर रक्खया तैनूं संभाल, सोहणा घर वखाईआ। सहज सहज आपणी उंगली लाए नाल, तेरा जोड़ जुड़ाईआ। छोटा भोरा लए उठाल, आपणे मुख लगाईआ। उह मन्दर गुरूदवारा सची धर्मसाल, जिस गृह साहिब सतिगुर पुरख अकाल प्रगट हो के तेरा रस बणाईआ। ओसे वेले प्रसाद खुशी नाल मारी छाल, परात विच्चों थालीआं विच्च आईआ। कहे मैनूं छेती छेती भगतां दिउ खवाल, मैं भगतां अंदर रल के भगतां विच्च समाईआ। मेरी लेखे लग्गे घाल, पुरख अबिनाशी थाएं पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ।

सुण प्रसाद प्रभ दस्से सच, सच सच रिहा जणाईआ। तेरे अंदर मेरा रस, रसीआ हो के दित्ता भराईआ। जन भगतां हिरदे जा के वस, सोहणा धाम सुहाईआ। कूड़ अन्धेरा मेट हस्स, सच्चा चन्द रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेस अलाईआ।

प्रसाद कहे मैं अंदर वड़दा हां। जन भगतां जा के दस्सदा हां। सोहणा रस भरदा हां। दर दर सेवा करदा हां। पंच विकारे नाल लड़दा हां। सोहणे पौड़े चढ़दा हां। नाड़ी नाड़ी फिरदा हां। घुंमण घेरी विच्च घिरदा हां। फेर जन भगतां हिरदे विच्च खड़दा हां। जिथ्थे इक्को तेरा नाम पढ़दा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क देणा सच्चा वर, मैं सची आसा रखदा हां।

सची आस प्रभू मेरी एक, एकँकार तेरे अग्गे अरज़ोइया। मेरा लिख अग्गे लेख, पिछला लेख चुकाईआ। जो तेरा करन हेत, सद तेरे विच्च समाईआ। मैनूं ओन्नां कोल

भेज, बाकी हत्थ ना किसे फड़ाईआ। मैं माणां भगतां सेज, घर सोहणे आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वडयाईआ।

सुण प्रसादि, परम पुरख जणाईआ। जन भगतां दे के सची दाद, तेरा संग बणाईआ। अड़ुरा वक्खरा सभ तों स्वाद, आपणा नाम भराईआ। दीन दयाल रच के काज, करनी रिहा कमाईआ। पूरब लेखा पूरी कर के ख़ाहश, ख़ालश धार दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखे खेल थाउँ थाईंआ।

प्रसादि कहे मैं भगतां रंग रंगावांगा। अंदर वड़ के सच समझावांगा। पौड़े चढ़ के कुण्डा लाहवांगा। दर दवारे खड़ के अलख जगावांगा। प्रतक्ख तेरा रूप दरसावांगा। हक़ हकीकत खोलु अक्ख, नेत्र नैणां नैण मिलावांगा। सच प्रीती दे रस, अमृत इक्क चवावांगा। जो मैनूं खाए सो तेरा गाए जस, जस वेद पुरानां नालों वक्खरा, तेरा निशअक्खरां विच्च दृढ़ावांगा। वेखीं मेरी भेटा ना कराईं अग्गे पत्थरां, कीमत काग़ज़ां उत्ते ना पाईआ। मैं वी वक्खरां तूं वी वक्खरा तेरा भगत वक्खरा, वक्खरयां दी वक्खरी राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे वडयाईआ।

सुण प्रसादि सोहणे सुत, अच्छी तरा जणाईआ। अच्छा होया तूं लिआ पुच्छ, आपणा दुःख सुणाईआ। हुण ना उहला ना कोई लुक, परदा उप्पर ना कोई रखवाईआ। कर किरपा तैनूं आप पावां भगतां मुख, आपणी सेव कमाईआ। जिनां देवां सदा सुख, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर निगह उठाईआ।

प्रभू जे भगतां मुख पावेंगा। मेरा ध्यान रखावेंगा। सोहणा संग बणावेंगा। आपणा रंग चढ़ावेंगा। अंदर लंघ की मेरे कोल आवेंगा। सोहणी सेज पलँघ हंढावेंगा। प्रेम रस किस वेले मेरा मेरे विच्चों प्रगटावेंगा। सच दस्स आपणा दस्त मुबारक हत्थ, किस वेले मेरे उप्पर टिकावेंगा। आपणे प्रेम प्यार दी खोलु के अक्ख, नेत्र नैण आपणी झलक वखावेंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमावेंगा।

सच करनी ज़रूर करावांगा। जो जन आए सरनी, तिनां तेरा रस चखावांगा। रस खा के चुक्के मरनी डरनी, लक्ख चुरासी डेरा ढाहवांगा। सच तरावां इक्को तरनी, शौह दरिया पार वखावांगा। लहणा चुका वरनी बरनी, ज़ात पात मेट मिटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद तेरा संग रखावांगा।

प्रसाद कहे मैं जावां मन्न, मन मनसा रहण ना पाईआ। जिस वेले गुरमुख अंदर वसां तन, तपदे हिरदे ठंडे दिआं कराईआ। जो तेरे सचे जन, तिनां भरम भुलेखा मेट मिटाईआ। जो प्रभू सिधे तैनूं रहे मन्न, तिनां मिल के तेरा रूप वेखां चाईं चाईंआ। फेर

मैं होवां बड़ा प्रसन्न, प्रसन्ता विच्च गुरमुख सारे नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा लेखे लाईआ।

प्रभ कहे प्रसाद तेरी सच वंड, हरि करता आप कराइंदा। भगतां नाल नाता गंढु, सोहणा जोड़ जुड़ाइंदा। दोहा मेल मिला के पावे ठंड, आपणी निगह नाल तराइंदा। जो तैनूं गुरमुख खावे बत्ती दन्द, रस नाल रसना सोभा पाइंदा। सो सन्त सुहेला मेरा चन्द, नूरी जोत जगत चमकाइंदा। जन्म मरन दा तोड़ के फंध, बंधन कूड़ सर्ब गुआइंदा। दीन दयाल ठाकर स्वामी हो बख्शंद, रहमत आपणा नाम कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा।

प्रसाद कहे मेरा पूरब लेखा, रविदास रिहा चुकाईआ। श्री भगवान तूं वी रक्खया चेता, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। हुण परोहत बण किसे ना वरजिआ नेंदा, घर सद्दण कोई ना जाईआ। ब्राह्मण चारे कुण्ट वेंहदा, नेत्र नैण उठाईआ। अबिनाशी करता दूर दुराडा सभ तकेंदा, बिन अक्खां नैण उठाईआ। लहणा देणा सभ दा देंदा, देवणहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ।

प्रसाद कहे प्रभ मैं तेरे नवित्त, आपणा आप भेट चढ़ाइंदा। मैनूं किसे गोचरा ना देवीं सुट्ठ, तुध बिन नज़र कोई ना आइंदा। जिनां चिर हाजर हो ना लावें मुख, ओनां चिर मैनूं प्रसादि ना कोई अखवाइंदा। एहो मैनूं वड्डा दुक्ख, पंडत पांधा साधू सन्त तेरा नाम लै के मुड़के आपे बह के खाइंदा। वड्डा कढ़ु के बुक्क, बच्चिआं लई लुकाइंदा। साहिब तेरे अग्गे काहदा लुक, पिछला हाल सुणाइंदा। वड्डी गल्ल छोटा मुख, दस्सदिआं नैण शरमाइंदा। तेरे बिनां कोई नहीं रिहा पुच्छ, सिर हत्थ ना कोई टिकाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दा जे लोकमात ठेका गिआ मुक्क, मेरा लेख क्यों नहीं आपणी झोली पाइंदा। बिन तेरे कितों ना मिले सच सुच्च, जूठ झूठ जगत जहान नज़री आइंदा। जन भगतां सदा पा मुख, दोए जोड़ एहो मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। (२८ माघ २०२० बिक्रमी)

* * * * *

प्रसाद कहे सफ़र कीता जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग हंडाईआ। भेटा चढ़ दे रहे मन्दर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ गुरूदवार, आपणा आप तेरे घर टिकाईआ। सानूं खांदे रहे ठग्ग चोर यार बेशुमार, गफ्फे मात लगाईआ। सच पुछें प्रभ सानूं उत्ते रिहा नहीं कोई इतबार, दाअवे कूड़े नज़री आईआ। जेहड़े मेरे विच्च तेरा नाम लै फेरन कटार, उहो मैनूं खा खा काम क्रोध रहे वधाईआ । नार विभचार करन शिंगार, कूड़ कुड़िआर चतराईआ। तेरा दिसे ना कोई प्यार, सच प्रीत ना कोई लगाईआ। असीं दुखी रहे जुग

चार, बिन गोबिन्द साड्डा रस ना कोई भराईआ। सदी वीहवीं होए लाचार, लाचारी तैनूं दित्ती सुणाईआ। धन्न भाग तूं आयो हरि निरँकार, निरगुण निरवैर फेरा पाईआ। वीह सौ इक्की बिक्रमी सोलूं कत्तक दिवस विचार, सुहञ्जणी रैण नाल मिलाईआ। ओथ्थे थोड़ा कलिजुग लहणा दित्ता झोली डार, पिछला मूल चुकाईआ। गुरमुखां कोलों जगत करा विहार, रसना जिह्वा बोल बुलाईआ। हुक्मे अंदर कढ़ु के बाहर, कलिजुग अग्गे दित्ता लाईआ। तिन्न जुग फेर ना वड़िआ एस दरबार, जिथ्थे गुरमुख सोभा पाईआ। अग्गे जुग दा इक्क भगत होवे दिदार, दूजे गिरधार मिले वडयाईआ। तीजे पाल होवे सिकदार, पतिपरमेश्वर सीस हत्थ टिकाईआ। कलिजुग रोंदा गिआ ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पुरख अबिनाशी जो बोलों आपणा शब्द अपार, मैं सुणां चाईं चाईंआ। पारब्रह्म प्रभ हर घट जानणहार, आपणी कल वरताईआ। गुरमुखां वाला छड्ड के ओथ्थे विहार, पहली मध्घर लेखा दित्ता समझाईआ। जिथ्थे होवे भगत दवार, भगवन फेरा पाईआ। ओथ्थे विछड़े मिलण यार, यारी तोड़ निभाईआ । हँस मिलण कावां डार, काग हँस रूप वटाईआ। सतिगुर दा शब्द शिंगार, माला तन पहनाईआ। मन का मणका करे इज़हार, इक्को राग सुणाईआ। तूं ही तूं मेरा निरँकार, तेरी बेपरवाहीआ। तिन्ने उठो इक्को वार, गुर प्रसादि रिहा बुलाईआ। सेवा करो हो के ख़बरदार, प्रभू ख़बर आप जणाईआ। बाबूपुर नहीं एह बाबल दा विहार, जिस कुआरे सारे लए परनाईआ। सभ दा मालक कन्त भतार, पुरख अकल अखवाईआ। ओथ्थे नार कन्त दा नहीं सवाल, नारी पुरुष इक्को रंग रंगाईआ। सचखण्ड दी सची धर्मसाल, धर्म दवारा दए वखाईआ। जिथ्थे बैठण शाह कंगाल, गुरमुख साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, राज नरैण विच्च रखवाईआ। (१ मध्घर २०२१ बि)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभ सचा, घर सच देवे वडयाईआ। हरि सन्त कहे प्रभ प्रेम रत्ता, रंग रंगीला रंग रंगाईआ। गुरमुख कहे सद खवाए अगम्मी भत्ता, राज़क रहीम वड्डी वडयाईआ। गुरसिख कहे सीत प्रसाद जिस वेले चक्खा, रसना जिह्वा बत्ती दन्द जोड़ जुड़ाईआ। काया दुआर डूंघी भवरी रक्खा, गृह मन्दर टिकाईआ। सोहणा रस वेख्या मिट्ठा, अनरस रूप वखाईआ। अन्तर खुल्ल गई इक्को अक्खां, दोए लोचण बन्द रखवाईआ। आत्म परमात्म गावे जसा, सोहणा राग अलाईआ। मिट गई रैण अन्धेरी मस्सा, जोती चन्द नूर रुशनाईआ। ठाकर मिल्या अलख अलक्खा, बेअन्त बेपरवाहीआ। रोम रोम अंदर रचा, रचना आपणी दए समझाईआ। प्रेम प्रीती अंदर कहे उठ मेरे बच्चा, मेहर नज़र उठाईआ। वेख वखाया काया माटी पंज तत्त भाण्डा कच्चा, साढ़े तिन्न हत्थ फोल फुलाईआ। मन मनुआ दह दिशा चार कुण्ट उठ उठ नट्ठा, दिवस रैण भज्जा वाहो दाहीआ। अन्ध अन्धेरे संझ सवेर वगा, सीतल पौण ना कोई वखाईआ। कूड़ी क्रिया तत्त वकारी जगत हँकारी गंदा, वासना ममता मोह जणाईआ । काया माटी पोच बसतर पा के चंगा, शस्त्र आपणा अंग बणाईआ । बिन साहिब सतिगुर किरपा दिसे नंगा, ओडण सीस ना कोई टिकाईआ । लेखा जाणे

ना ब्रह्म ब्रह्मण्डा, भेव अभेद ना कोई खुल्लाईआ। उत्तम श्रेष्ट गुरमुख गुरसिख गुर प्रसाद बणाए चंगा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

प्रसाद कहे मेरा गुरमुख संग, नित नवित्त वडयाईआ। गुरसिख कहे मेरी सतिगुर कोलों मंग, धुर किरपा झोली पाईआ। दोहा मिल के आवे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। मिल के ढोला गावण छन्द, शब्द नाल शनवाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

गुरमुख कहे मैं सीत प्रसाद खादा, साहिब सतिगुर दित्ता वरताईआ। मैनूं नज़री आया गोबिन्द पिता पुरख अकाल दादा, दो जहानां वेख वखाईआ। उप्पर तक्कया शाह पातशाह शहनशाह दिसे राजा, भूपत भूप बेपरवाहीआ। चार कुण्ट पेखिआ निरगुण सरगुण करे काजा, लक्ख चुरासी जोड़ जुड़ाईआ। भविख्त वेख्या निरगुण निरवैर निराकार जोत प्रकाशा, अजूनी रहित रूप रंग रेख ना कोई वखाईआ। अंदर तक्कया घर सज्जण बणे साथा, सोहणा संग निभाईआ। पर्दा चुक्कया धुर दा राग सुणाए गाथा, अनहद नादी नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सभ देवे माण वडयाईआ।

गुरमुख कहे गुर प्रसाद, हरि किरपा नज़री आईआ। बिन भगतां किसे ना आवे हाथ, लक्ख चुरासी रही कुरलाईआ। कोटन कोट खा खा थक्के साध, साधना सके ना कोई कराईआ। नेत्र अक्ख खोल्ह ना सके जाग, आलस निंदरा ना दूर कराईआ। घर मन्दर महल्ल दीपक जोत ना जगे चराग, हवण पौण सुगंदी सति ना कोई समाईआ। आत्म परमात्म मिल के पूरी करे ना कोई खाहिश, ख़ालश रूप ना कोई समाईआ। कर किरपा जिस देवे दात, प्रभ आपणी वस्त वरताईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन बणाए सज्जण साक, भगत भगवान मेल मिलाईआ। बजर कपाटी खोल्ह ताक, तर्रां तर्रां समझाईआ। सन्त सुहेला बणके पुच्छे बात, दर दरवेश अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वडयाईआ।

प्रसाद कहे प्रभ होए मेहरवान, हत्थ तेरे वडयाईआ। लोकमात ना कोई माण, नव खण्ड ना कोई चतुराईआ। मैनूं तेरी भेट चाढ़न वाले बेईमान, हिरदे हरि ना कोई वसाईआ। ठग्ग चोर यार मेरा हिस्सा पाण, पैसिआं टकयां नाल तैनूं रहे मनाईआ। दिने ठग्गी रात हराम, सति सन्तोख ना कोई वखाईआ। दिने कलमा रात बेईमान, शरअ शरीअत झूठा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेख दे चुकाईआ।

प्रसाद कहे प्रभ मेरे ठाकर, दर तेरे अरज़ोइया। कलिजुग जीव बणे सौदागर, तेरा नाउँ हट्ट चलाईआ। निर्मल कर्म करे ना कोई उजागर, दुरमत मैल पापां भरी लोकाईआ।

किसे दुआरे मिले ना मैनूं आदर, साध सन्त संग ना कोई निभाईआ। किसे गृह किसे मन्दर किसे गुरूदवार साहिब सतिगुर आप कदे ना होयो हाजर, भोग ला ना खुशी मनाईआ। तेरे सामुणे तेरे दवार तेरे नाल दुहाईआ। मैं मिलापी सन्तां दर दा, गुरमुखां जोड़ जुड़ाईआ। गुरसिखां लड़ फड़दा, धुर दा संग रखवाईआ। जिस वेले गुरमुखां अंदर वड़दा, प्रेम प्रीती नज़री आईआ। ओनूं नाल मिल के तेरा नाउँ पढ़दा, सोहणी करां पढ़ाईआ। वेख गृह नरायण नर दा, नर हरि इक्क नज़री आईआ। लेखा चुक्के चोटी जड़ दा, भेव अभेद आप समझाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हत्थ टिकाईआ।

सिर मेरे हत्थ रक्ख महिबूब, मुहब्बत तेरे नाल लगाईआ। महल्ल अट्टल अगम्म अथाह तेरा अरूज, अर्श फर्श दोवें सीस निवाईआ। तेरा धाम सच मंज़ल मकसूद, महिफ़ल इक्को सोभा पाईआ । परवरदगार ना कोई दूज, वाहद नूर नूर खुदाईआ। तुध बिन सच देवे ना कोई सबूत, साज़श भरी सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ।

सुण प्रसाद धुर दे रस, हरि रसीआ सच दृढ़ांइदा। परम पुरख परमात्म सभ दा देवे हक़, जुग जुग झोली आप वरताइंदा। कूड़ी क्रिया जगत खेड़ा होवे भट्ठ, कलिजुग भाण्डा भरम भन्नाइंदा। लेखा चुक्के मन्दर मसीत शिवदवाले मट्ठ, मस्त अलमस्त आपणी कार कमाइंदा। प्रगट हो पुरख समरथ, मूरत अकाल इक्को नूर दरसाइंदा । शब्द सतिगुर सभ कुछ लै के आपणे हत्थ, ख़ाली हत्थ सर्ब फिराइंदा। दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड ज़िमी असमान जेरज अंड उत्भुज सेतज खोलुणहारा अक्ख, आखर आपणा भेव चुकाइंदा। आत्म परमात्म सृष्ट सबाई दे ब्रह्म मत, पारब्रह्म ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाइंदा। कूड़ कुड़यारे तेरा साथ जाइण छड्ड, सगला संग आप निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, धुर दा लेखा लेखे विच्च रखवाइंदा।

(२६ माघ २०२० बि)

* * * * *

प्रसाद कहे पुरख समरथ, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। आदि जुगादी धुर दी वत्थ, वस्त अमोलक बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर करदा रिहा आस, नित नवित्त तेरा ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात कट के गए वाट, बण पान्धी पन्ध मुकाईआ। पीरन पीर सरगुण गए तलाश, लोक परलोक तेरा ध्यान लगाईआ। साहिब स्वामी तेरी किसे ना लभ्भी ज़ात, जाति रूप ना कोई जणाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द धुर संदेसा गा के गाथ, शब्द अनादी नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे सच दे वडयाईआ।

प्रसाद कहे प्रभ मेरे ठाकर, तेरे हत्थ वडयाईआ। जुग चौकड़ी लोकमात फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मेरा करदे गए आदर, थोड़ा थोड़ा परदा पाईआ। निर्मल कर्म ना होया उजागर, मेहर नज़र ना कोई उठाईआ। साचा वणज ना कीता बण सुदागर, बण वणजारा हट्ट चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वडयाईआ।

प्रसाद कहे मेरे अन्तरजामी, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। तेरा खेल ख़ालक ख़लक महानी, बेपरवाह बेअन्त अन्त कहण कोई ना आईआ। जुग चौकड़ी गावत गा गए सच ज्ञानी, धुर दा ढोला राग सुणाईआ। रस अंमिउँ रस ठंडा पाणी, धारा तेरी इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भेव दए खुलाईआ ।

साचा भेव खोलू निरँकार, निरगुण हत्थ तेरे वडयाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच्च संसार, नव नौं चार पन्ध मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बण के सेवादार, नित सेवा रहे कमाईआ। त्रैगुण माया खोलू भंडार, पंज तत्त करी कुड़माईआ। घाड़त घड़ बण ठठिआर, लक्ख चुरासी रंग रंगाईआ। निरगुण सरगुण कर त्यार, नाता जोड़ जुड़ाईआ। दीआ बाती कर उजिआर, कमलापाती सोभा पाईआ। मन मत बुध दए आधार, नौं दर जगत रस वखाईआ। लेखा जाण धुर दरबार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दे वखाईआ।

साचा लेखा दस्स श्री भगवन्त, बेअन्त तेरी सरनाईआ। किस बिध बणाई मेरी बणत, कवण धारा रंग रंगाईआ। कवण लेखा जाणे साध सन्त, गुर अवतारां कवण वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पर्दा दे उठाईआ।

साचा परदा देणा खोलू, प्रभ तेरे हत्थ वडयाईआ। दर दरवेश मंगाँ बोल, अलक्ख निरञ्जण इक्को अलख जगाईआ। कवण कंडे तोलें तोल, तराज़ू कवण हत्थ उठाईआ। कवण दवारा देवें खोलू, बन्द कवाड़ी कुण्डा लाहीआ। कवण वस्त देवें वरोल, अनमुलड़ी दात वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शाह पातशाह सचे शहनशाहीआ।

शहनशाह प्रभ ठाकर स्वामी, दर तेरे इक्क अरज़ोइया। आदि जुगादी अन्तरजामी, देणी दर दवारे सची ढोईआ। लेखा वेख्या चारे खाणी, चारे बाणी करे रुशनाईआ। अमृत भरे ठंडा पाणी, शब्द सुरत रिहा ढोईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दूजा नज़र ना आवे कोई आ।

प्रसाद कहे मेरी दस्स रीता, किस बिध मात बणाईआ। कवण दवारे मोहे रखीता, कवण मन्दर सुहाईआ। कवण मिले धुर दी दीछा, झोली कवण भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ।

सुण प्रसाद धुर दे सचे, हरि सच सच जणाईआ। किरपा करी पुरख अकाल आपणे उत्ते शब्दी बच्चे, मेहर नज़र नैण उठाईआ। चरन प्रीती नाल रत्ते, रंग इक्को इक्क रंगाईआ। साहिब स्वामी सिर हत्थ रक्खे, समरथ दए वडयाईआ। चरनां नाल चरन कर इक्ठे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ।

मेहर नज़र कर पारब्रह्म, हरि करता आप जणाईआ। सति प्रसाद सुण ला कर कन्न, करनहार दृढ़ाईआ। हरख़ सोग ना कोई ग़म, चिन्ता चिखा ना कोई जणाईआ। हउमे रोग ना तृस्ना तम, माया ममता ना कोई वडयाईआ। जिस दवारे शब्द सुत बिन जननी लिआ जण, निरगुण बणया पिता माईआ। ओसे दर बेड़ा दित्ता बन्नु, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच लेखा दए समझाईआ।

साचा लेखा सुण ला मीत, मित्र प्यारा आप जणाइंदा। थिर घर चलाई तेरी रीत, निरगुण निरवैर कार कमाइंदा। शब्दी झोली पाया ठीक, सोहणी वस्त वरताइंदा। रस दे के अगम्मी सीत, सांतक आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा।

साची करनी हरि करतार, आदि पुरख आप कमाईआ। निरगुण निरवैर निराकार किरपा धार, अजूनी रहित दित्ती वडयाईआ। बख्शिश कर अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर दित्ता वरताईआ। आपणे चरनां दी लै के धूढ़ी छार, शब्दी सुत मुख लगाईआ। एह प्रसादि सदा निराहार, निराकार रिहा जणाईआ। जिस दा भेव पाए ना कोई जुग चार, चौकड़ समझ कोई ना आईआ । एसे प्रसादि विच्चों प्रगट कर गुरू अवतार, पीर पैगम्बर रूप वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए समझाईआ ।

प्रसाद कहे मेरी निमस्कार, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। दर ठांडा दित्ता दरबार, थिर घर वज्जी वधाईआ। तेरा शब्दी सुत रक्खे संभाल, आपणे नाल निभाईआ। जुग चौकड़ी दे अधार, लोकमात दए वरताईआ। मेरा लेखा होवे शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ।

सुण प्रसाद बाले निक्के, श्री भगवान आप जणाइंदा। चारों कुण्ट साहिब स्वामी तेरे अंदर दिसे, गृह मन्दर डेरा लाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत कीते तेरे हिस्से, सोहणा हिस्सा वंड वंडाइंदा। सच बंधावे धुर दे निसचे, दूजा इष्ट ना कोई वखाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा।

सुण प्रसाद चढ़या चा, थिर घर साचे वज्जे वधाईआ। शब्दी शब्द बणे गवाह, तेरी शहादत रिहा रखाईआ। अग्गे मंगाँ मंग बेपरवाह, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। जुग चौकड़ी सेवा लवां कमा, लोकमात वेस वटाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लेखा देवां लिखा,

जिस लेखे विच्चों रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच दे समझाईआ।

सुण लाल सोहणे सुचज्जे, साहिब देवे वडयाईआ। अन्तकाल तेरा पर्दा कज्जे, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर हुक्मे बद्धे, जुग चौकड़ी कार कमाईआ। गुरमुख गुरसिख हरि सन्त भगत तेरी आस रक्खे, नेत्र नैण नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच वर, सच मिले तेरी सरनाईआ।

सच सरनाई दे भगवन्त, इक्को ओट तकाईआ। कवण वेला बणे साचा कन्त, घर आपणा मेल मलाईआ। बोध अगाध बण के पंडत, निरअक्खर दए समझाईआ। सति सतिवादी देवे संगत, विद्या पारब्रह्म पढ़ाईआ। दर दरवेश बण के मंगत, इक्को अलख जगाईआ। गढ़ तोड़ हउमें हंगत, हँ ब्रह्म समझाईआ। लेखा जाणे पंकज, पवित तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, साहिब तेरी वडयाईआ।

साहिब दस्स पुरख अकाल, दर करते मंग मंगाईआ। कवण वेले होए दयाल, दीनन आपे होए सहाईआ। जुग चौकड़ी केहड़ी चाल, कवण धार रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दए समझाईआ।

श्री भगवान कहे सुण एक, एकँकार जणाईआ। जुग चौकड़ी तेरी टेक, गुर अवतार पीर पैगम्बर नाल मिलाईआ। बिन भगतां किसे ना देवां भेत, पर्दा सके ना कोई खुल्लाईआ। घर नामे आ के लवां वेख, धन्ने लेखा दिआं चुकाईआ। रविदास चुमारे करके चेतन्न चेत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वडयाईआ।

सुण प्रसाद बात अगम्म, लिखण पढ़न विच्च ना आईआ। मेरे लाडले सचे चन्न, चमतकार दिआं चमकाईआ। भोग ला के नामे छन्न, छन्नां सोभा पाईआ। धन्ने देवां इक्को धन्न, आपणा आप झोली पाईआ। रविदास दवारे जावां मन्न, सोहणी बणत बणाईआ। सच संदेसा सुण लै कन्न, हरि करता आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ।

सुण के बचन होया चुप, प्रसाद आपणा सीस निवाईआ। श्री भगवान कवण वेले वेखां मुख, तेरा सच सरूपी दर्शन पाईआ। पुरख अकाल किहा तुठ, सच दिआं दरसाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग होणा चुप, नव नव चार चौकड़ी युग पार कराईआ। पारब्रह्म पतिपरमेवर तैनूं आपे लए पुच्छ, पर्दा उहला आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वडयाईआ।

प्रसाद किहा मेरी अरदास, साहिब तेरी सरनाईआ। तेरे मिलण दी इक्को ख़ाहश, दूजी ओट ना कोई तकाईआ। जुग चौकड़ी की रवाज, कवण धार बंधाईआ। साहिब समरथ मार अवाज़, इक्को वार जणाईआ। छत्री ब्राह्मण शूद्र वैश बणे समाज, सोहणी बणत बणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवां साथ, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। तेरी वक्खरी मण्डल बणावां रास, सोभावन्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा दए वखाईआ।

तेरा लेख प्रभ जणाउँदा ए । धुर दी धार आप समझाउँदा ए । लोकमाती वंड वंडौंदा ए। साचा मेला मेल मलौंदा ए। जल अमृत रूप वटाउँदा ए। घृत अगम्मी इक्को पाउँदा ए। अन्न झोली दान वखाउँदा ए। तिन्नां सच मेल मलाउँदा ए। फड़ अगनी भेट चढ़ाउँदा ए। धुर दा लेखा आप वखाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी डोर लोकमात गुर अवतारां पीर पैगम्बरां हत्थ रखाउँदा ए।

पीर पैगम्बर मात आउंणगे। गुर अवतार रूप वटौणगे। मेरा धुर दा नाम जपौणगे। सच संदेश इक्क सनौणगे। कर के देही खेल खवलौणगे। बण नरेश हुक्म वरतौणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची करनी मात कमौणगे।

साची करनी मात कमावणगे। गुर अवतार पीर पैगम्बर फेरा पावणगे। धुर संदेस इक्क सुणावणगे। बण कातब लेख लिखावणगे। शास्त्र सिमरत वेद पुरान, गीता ज्ञान अंक बणावणगे। अञ्जील कुराना कर परवान, मसला हक़ हक़ सुणावणगे। गुरू गुरू गुरदेव अगम्मी बाण, तीर निराला इक्क चलावणगे। लालच दे के जीव जहान, सोहणी रीती मात वखावणगे। मन्दर मस्जिद शिवदवाले मद्ध बणा मकान, सोहणा बंक वड्डिआवणगे। अंदर रक्ख चार जुग दी खाणी बाणी कर प्रधान, सोहणा राह वखावणगे। माया नाल कर पकवान, पक्की तरां जगत समझावणगे। सभ तों उत्तम एह खाण, सृष्टी इष्ट दृष्ट एहदे विच्च वखावणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कार कमावणगे।

धुर प्रसाद पिआ हस्स, प्रभ अग्गों आख सुणाईआ। वेखीं प्रभ मैनूं होर किसे ना पावीं वस, वास्ता तेरे नाल रखावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो मैनूं लाए हत्थ, उस हत्थ विच्चों तेरा रस आपणे मुख लगावांगा। उह तेरे वस मैं ओनां वस, फिर भी वास्ता तेरे अग्गे पावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे सीस निवावांगा।

दर तेरे सीस नवावांगा। अलक्ख अगोचर इक्को संग निभावांगा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग दे के संग, लग्गी तोड़ निभावांगा। सृष्ट सबाई कर के नंग, चारों कुण्ट

खेल करावांगा। फिरे दरोही विच्च वरभंड, ब्रह्मण्डी नाद वजावांगा। कलिजुग कूड़ी क्रिया घर घर होए घमंड, माया ममता मोह वधावांगा। गुर मर्यादा कर के भंग, भंगढ़ा आपणा फेर वरवावांगा। साध सन्त पंडत ब्रह्मण मुल्लां काज़ी मेरे उतों लँघावण डंग, सोहणी कूड़ी वंड वंडावांगा। चारों कुण्ट भेख पखण्ड, आत्म परमात्म भरम भुलावांगा। मैनूं खा के किसे ना आवे अनन्द, अनन्द विच्चों अनन्द बाहर कढावांगा । मैनूं कह के गिआ गुजरी चन्द, सच संदेसा इक्क समझावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवावांगा।

दर तेरे सीस निवावांगा। दोए जोड़ वास्ता पावांगा। धुर दा साथ इक्क रखावांगा। पुरख अकाल ओट तकावांगा। दीन दयाल दर्शन पावांगा। तोड़ जंजाल जगत, भगत भगवान मनावांगा। मन्दर मसजद बेशक मेरी सारे चाढ़न रसद, रस्ता सभ दा बन्द करावांगा। बिन पूरे गुरमुख मैनूं खा के कोई ना होवे मस्त, गधिआं वांग सर्ब लिटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगावांगा।

दर तेरे मंग मंगौदा हां। दोए जोड़ वास्ता पौंदा हां। अन्तर आपणी आवाज़ सुणौंदा हां। जुग चौकड़ी वेख वखौंदा हां। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाल तोड़ निभौंदा हां। मन्दर मसजद शिवदवाले मठ्ठ गुरूदवारे सोभा पौंदा हां। जिंनां चिर पारब्रह्म पतिपरमेश्वर प्रगट हो ना लावें हत्थ, प्रसाद रूप ना मैं वखौंदा हां। बेशक मैनूं रुमालिआं हेठ देण ढक, ऊपर पक्खआं चौर झुलौंदा हां। जिंनां चिर मिले ना पुरख समरथ, आपणी भेट ना किसे चढ़ौंदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे सीस निवौंदा हां।

सुण प्रसाद सच्ची बात, पारब्रह्म प्रभ आप जणाईआ। तेरा लहणा कोई ना जाणे विच्च परात, भेव अभेव ना कोई खुलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवण साथ, लोकमात संग निभाईआ। साचा खेल वेखो तमाश, शब्द सुत वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेख इक्को रिहा दृढ़ाईआ।

जो किहा पुरख अकाल, धुर दी बात सुणाईआ। किरपा करे दीन दयाल, दयानिध वडयाईआ। निरगुण चले अव्वलड़ी चाल, लिखण पढ़न विच्च लेख ना कोई बणाईआ। सचखण्ड बैठ सची धर्मसाल, सच प्रसाद तैनूं दए प्रगटाईआ। आ के सुणे मुरीदां हाल, मुशर्द आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तोहे देवे सच वडयाईआ।

सच वड्डिआई आप दवावांगा। निरगुण हो के वेस वटावांगा। रविदास दवारे चल के आवांगा। सच सिँघासण सोभा पावांगा। पाटा चीथड़ उप्पर विछावांगा। बण के मीतल, मित्र प्यार अखवावांगा। कर के ठांडा सीतल, अमृत मेघ बरसावांगा। तूं रखीं

मेरी उडीकण, मैं आपणा वेस वटावांगा। भुल्ल ना जाई तरीकण, तरीके नाल समझावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमावांगा।

की प्रभू कार कमावेंगा। जिस वेले रविदास कोल आवेंगा। कवण रूप अनूप वटावेंगा। कवण कूट सोभा पावेंगा। कवण जोत नूर चमकावेंगा। कवण शब्द चोट नगारे लावेंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, किस बिध आपणा मेल मिलावेंगा।

रविदास चमारे जदों आवांगा। निरवैर निरँकार निराकार अखवावांगा। जोती धार रूप प्रगटावांगा। शब्दी तार नाद इक्क वजावांगा। ब्रह्म ब्रह्माद आप उठावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव अक्ख खुल्ह़ावांगा। स्वच्छ सरूपी हो प्रतक्ख, गृह मन्दर नज़री आवांगा। लै के वस्त इक्क अकथ्थ, घर साचे फेरा पावांगा। अगला मार्ग देवां दस्स, पिछला पन्ध मुकावांगा। सच प्रसाद तेरा रस, आपणे रस विच्चों प्रगटावांगा। जिस दा कोई गा ना सके जस, शास्त्र सिमरत वेद पुरान भेव ना किसे दृढ़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमावांगा।

प्रसाद कहे मोए चाओ घनेरा, प्रभ वज्जे इक्क वधाईआ। नाता जुड़े तेरा मेरा, दूजा नज़र कोई ना आईआ। धन्न भाग मेरा बन्ने बेड़ा, लोकमात आपणे कंध टिकाईआ। मैं वसदा वेखां सोहणा खेड़ा, जिस गृह बह के सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी रक्खां जेरा, चरन कँवल ओट तकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेवर पावे फेरा, आपणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचे देणी वडयाईआ।

सुण प्रसाद मेरे लाल, हरि लालन दए जणाईआ। सच दवार सोहे सची धर्मसाल, श्री भगवान सोभा पाईआ। इक्को खेल करां महान, महिमा कथ अकथ्थ वडयाईआ। रविदास दा लै सुक्का पकवान, सच प्रसाद दिआं बणाईआ। गुरमुख विरले गुरसिख खाण, हरिभगत रसना लैण लगाईआ। खादिआं लेखा चुक्के दो जहान, आवण जावण रहण ना पाईआ। सो प्रसाद मोहे परवान, जो मेरा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ।

प्रसाद कहे प्रभ उह केहड़ा प्रसाद, जो जगत नाल बंधाईआ। जिहनूं खा खा कहण जीव जंत बड़ा सुआद, साध सन्त खुशीआं रहे मन्नाईआ। रसना कहण अज्ज वड्डे होए भाग, सोहणा पेट भराईआ। ऐहो जिहा मिले रोज़ खाज, प्रभ आसा पूर कराईआ। किस बिध चलाया उह खाज, जगत जीव दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे खुल्ह़ाईआ।

सुण प्रसाद जगत दा जस, जगजीवण दाता आप जणाईआ। नौं दवारे नौं रस

नौं खण्ड गई लग्ग, मन वासना ध्यान लगाईआ। माया ममता रसन प्यार करन हज्ज, हुजरा हक़ ना कोई वखाईआ। मिट्ठा रस सृष्ट सबाई लए छक, सिकवा अंदर ना कोई मिटाईआ। गुर प्रसाद कह के करन आपणा हक़, हकीकत विच्चों सार किसे ना आईआ। बिन भोग लगाया विच्चों हिस्सा कढु के लैण रक्ख, आपणी वंड वंडाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर किसे नज़र ना आवे प्रतक्ख, जाहर ज़हूर नूर ना कोई रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच दित्ता समझाईआ।

प्रसाद कहे उह वेला केहड़ा, प्रभ देवें माण वडयाईआ। लोकमात चुक्के झेड़ा, खैहड़ा दएं छुडाईआ। नज़री आवें नेड़न नेड़ा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मेहरवान हो के करे मेहरा, मेहर नज़र उठाईआ। कूड़ी क्रिया चुके झेड़ा, झंजट रहण कोई ना पाईआ। इक्को मन्दर इक्को गुरूदवार प्रभू तेरा, श्री भगवान नज़री आईआ। उस गृह लग्गे मेरा डेरा, घर बह बह खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब सच देवां समझाईआ ।

सुण प्रसादि कर ध्यान, हरि ध्यानी आप जणाइंदा। रविदास दवारे खेल महान, हरि करता आप कराइंदा। पिछला लेखा जाणे जीव जहान, परम पुरख परदा लाहिंदा। वेद व्यासा दे के गिआ बिआन, नारद मुन समझाइंदा। कवारी कन्नया जम्मयां बाल, पूत सपूता आप अखवाइंदा। धुर दा बण वड्डा विदवान, बोध अगाधा लेख जणाइंदा। मछन्दरी वेख नैण सरमाण, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। किधरों आया अगम्मी बाल, रूप अनूप कवण वखाइंदा। वेद व्यास कर परनाम, माता कह के सच सुणाइंदा। सप्त रिखी होया मेहरवान, नौका नईआ सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद खुल्हाइंदा। (पहली फग्गण २०२० बि)

* * * * *

हरि किरपा गुर प्रसादि, गुर प्रसादी संगत दया कमाईआ । हरि किरपा गुर सज्जण लाध, गुर सज्जण गुरमुख देवणहार वड्डिआईआ । हरि किरपा गुर देवे दाद, सतिगुर दाद जन भगतां झोली नाम भराईआ। हरि किरपा गुर रक्खे लाज, भगत भगवान वेखे थाउं थाईंआ । हरि किरपा गुर मार आवाज़, सन्त सुहेले उठाए चाईं चाईंआ। हरि किरपा गुर कराए वड वड भाग, वडभागी आपणा रंग वखाईआ। हरि किरपा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सतिगुर दया कमाईआ।

हरि किरपा गुर प्रसादि अमोघ, दीन दयाल आप जणाइन्दा । गुर गुर नाता धुर संजोग, धुर दरबारी मेल मिलाइन्दा। वस्तू सति देवे चोग, धार अमृत नाल मिलाइन्दा। जन्म अजन्म कट्टे रोग, चिन्ता सोग गवाइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइन्दा।

हरि किरपा गुर देवे प्रसादि, प्रसादी आपणी दया कमाईआ। गुर प्रसादि अनरस सवाद, रसना जिह्वा चक्खव ना सके राईआ। सो खाए जो होए विस्माद, बिसमल आपणा आप कराईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्डिआईआ।

गुर प्रसादि कहे मेरा प्रेम मित्रा, मित्रत मेरे विच्च समाईआ। मेरा रस बिन गुरमुखां किसे ना डित्रा, लक्खव चुरासी फिरे तिहाईआ। मैं अंदर बाहर प्रेम प्रीती अंदर बणां साचा मिता, मित्र प्यारा नाउं धराईआ। जुग चौकड़ी करां हिता, बण हितकारी सेव कमाईआ । जगत दवार रस होए फिॅका, फिक्की दिसे सर्ब लोकाईआ। जिस गुरमुख रस मेरा डिठा, सो गुरमुख गुर गुर घोली घोल घुमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र आप उठाईआ।

गुर प्रसादि कहे मेरी बनावट नज़र किसे ना आईआ। त्रैगुण मेल सच मिलावट, मेल मिलावे बेपरवाहीआ। मैनूं खादिआं गुरमुखां कदी ना आए थकावट, सुख सुख नाल उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेरा संग निभाईआ।

गुर प्रसादि कहे मेरा साचा रस, हरि पुरख निरञ्जण आप भराईआ। जुग चौकड़ी मैं आवां भगतां हत्थ, दूसर छोह ना सके राईआ। मेरे कोल बह के पैहलों गावण प्रभ दा जस, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। दोए जोड़ आपणी अग्गे रक्खण आस, आसा प्रभ चरन मिलाईआ। निवण प्रीती करन हो के दास, दासी रूप वटाईआ। रसना गौण पवण स्वास, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद वेखणहार आप हो जाईआ।

गुर प्रसादि कहे गुरमुख रक्खण चा, मेरे वल ध्यान लगाईआ। जुग चौकड़ी तक्कदे रहे राह, नेत्र नैण उठाईआ। कवण वेला श्री भगवान परम पुरख प्रभ निरगुण आपणा भोग लए लगा, सरगुण देवे आप वरताईआ। गुरमुख गुरमुख गुरसिख गुरसिख हरिजन हरिजन साचे सज्जण लैण खा, ख़ाहश अवर रहण ना पाईआ । प्रभ मिलण दा एहो लाह, ख़ाली भंडारे रिहा भराईआ। देवणहार सच्चा शहनशाह, दाता दर्दीआं दर्द वंडाईआ। गुर प्रसादि सांतक सति सीतल दए बणा, सति सरूप विच्च समाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म मरन दुक्ख कट्टण दी देवे इक्को वार इक्क दवा, दूजी वार दुःख जन्म कर्म ना लागे राईआ। (२६ हाढ़ २०२० बि)

* * * * *

सदी चौधवीं कहे प्रेम प्रीती नाल वरताउणा प्रशाद, प्रशाद सतिगुर दए बणाईआ। एह भगतां दी दाद, गुरमुखां झोली पाईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुखो मैं तुहाड्ढे विच्च रल गई आज, अग्गे विछड़ कदे ना जाईआ। तुहाड्ढा मेरे नाल समाज, मेरी तुहाड्ढे नाल

वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ दी पूरी करे आस, लेखा जाण पवण स्वास, साह साह आपणा नाम सुणाईआ। (२६ पोह २०२१)

* * * * *

प्रसाद देणा इक्को किणका, हरि जू मंग मंगाईआ। वेखो लहणा जिन जिन का, दर दर रिहा चुकाईआ। करे खेल छिन्न छिन्न का, छिन्न भंगर फेरा पाईआ। लेखा इन बिन का, इन बिन आपणा रंग रंगाईआ। चौदां पंदरां सोलां मेल मिलाया तिन्न दिन का, त्रैलोक वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि संगत प्रसाद लोकमात दी साची दाद, सचखण्ड लै के जाए चाईं चाईंआ। (१३—१६२)

* * * * *